दिसम्बर 2024 वर्ष 3, अंक 11

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.–मासिक समाचार

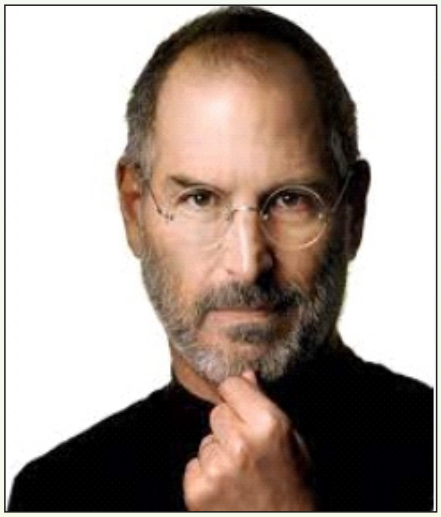

“ध्यान को केंद्रित करना (focus) और सरलता (simplicity)- यह मेरा एक मंत्र रहा है। सरल होना जटिल होने से ज्यादा कठिन हो सकता है: आपको अपनी सोच को साफ (clean) बनाने के लिये, जिससे वह सरल बन जाये, कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। पर यह करने योग्य है क्योंकि एक बार जब आप वहाँ पहुँच जाते हैं तो आप पहाड़ों को भी हिला सकते हैं।”

— स्टीव जॉब्स

खण्ड

खंड क	:	डी.ई.आई	3
खंड ख	:	डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा	6
खंड ग	:	डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)	10

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड क: डी.ई.आई.

1. डी.ई.आई.ने सेंट्रल जोन यूथ फेस्टिवल में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया 3
2. डी.ई.आई. की स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन 2024 में उल्लेखनीय जीत 3
संकाय/कॉलेज समाचार 4
3. विज्ञान संकाय 4
छात्रोपलब्धि: 4
4. डी.ई.आई. टैक्निकल कॉलेज 4
छात्रोपलब्धि: 4
5. एन सी सी गतिविधियां और उपलब्धियां 4
डी.ई.आई. टैक्निकल कॉलेज में नौवां रक्तदान शिविर आयोजित 4
यमुना नदी तट पर सफाई अभियान आयोजित 5
एन सी सी कैडेट्स की उल्लेखनीय उपलब्धियां: 5

खंड ख: डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

6. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से 6
7. डीईआई का ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम: छात्र नामांकन और छात्र प्रोफाइल पर डेटा 2024–25 सत्र के लिए 7
8. केंद्रों से समाचार 8
डीईआई केंद्रों पर नवाचार, गुणवत्ता और मूल्यांकन दिवस 2024 पर रिपोर्ट 8
जनजातीय नेताओं का उत्सव मनाना: बिरसा मुंडा की विरासत के सम्मान हेतु समारोह 9

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

9. संपादक की डेस्क से 10
10. सस्टेनेबिलिटी कप 2024: एक रिपोर्ट 10
अपूर्व नारायण
11. रा धा स्व आ मी सत्संग सभा गौशाला: लैक्टो–शाकाहार को बढ़ावा देना 12
प्रखर मेहरा
12. साहित्यिक अध्ययन में लैक्टो–शाकाहार पर शोध शुरू करना 14
गुरप्यारी भटनागर
13. लैक्टो शाकाहार – प्रकृति और मानवता का पोषण 15
प्रिया सिंह
14. पाठक प्रतिक्रिया अनुभाग 15
कृषि पारिस्थितिकी: प्रकृति के साथ खेती, विज्ञान द्वारा संचालित 15
स्री प्रभा एस
प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड 16

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

डी.ई.आई.ने सेंट्रल जोन यूथ फेस्टिवल में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग, आगरा–282005 ने 26 से 30 नवंबर, 2024 तक डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) में आयोजित गौर गौरव उत्सव (38वां एआईयू सेंट्रल जोन यूथ फेस्टिवल 2024–25) में विजयी प्रतिभागिता की। भारतीय विश्वविद्यालय संघ (एआईयू) के तत्वावधान में आयोजित इस महोत्सव में सेंट्रल जोन के तेईस विश्वविद्यालयों ने रंगमंच, ललित कला, साहित्यिक गतिविधियों और संगीत के क्षेत्र में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया, जिसमें कड़ी प्रतिस्पर्धा के साथ–साथ मैत्रीपूर्ण वातावरण भी था।

25 नवंबर को टीम मैनेजर, डॉ. संजय सैनी, सांस्कृतिक समन्वयक, डी.ई.आई. और डॉ. सीमा कश्यप, एसोसिएट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, कला संकाय, डी.ई.आई के नेतृत्व में छात्रों, प्रोफेशनल और शिक्षक अधिकारियों सहित 44 सदस्यों का एक समूह रवाना हुआ। पांच दिवसीय महोत्सव में डी.ई.आई कई स्पर्धाओं में विजयी रहा। संस्थान ने वेस्टर्न ग्रुप सॉन्ग में प्रथम पुरस्कार, वेस्टर्न वोकल सोलो में दूसरा पुरस्कार और वेस्टर्न इंस्ट्रूमेंटल सोलो में तीसरा पुरस्कार हासिल किया। इसके अलावा, टीम ने ऑन–द–स्पॉट पेंटिंग में तीसरा स्थान, माइम और कोलाज में चौथा स्थान और कार्टूनिंग में पांचवां स्थान प्राप्त किया।

यह उपलब्धि सांस्कृतिक और कलात्मक गतिविधियों के माध्यम से समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए डी.ई.आई. की प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है, जो कि प्रत्येक व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के विश्वविद्यालय के लक्ष्य को प्रतिबिंबित करती है। शीर्ष तीन स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी आगे 3 से 7 मार्च, 2025 तक एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय युवा महोत्सव में डी.ई.आई का प्रतिनिधित्व करने के लिए तैयार हैं।

डी.ई.आई. की स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन 2024 में उल्लेखनीय जीत

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डी.ई.आई.) ने स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन (एसआईएच) 2024 में उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ नवाचार और उत्कृष्टता के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। यह यात्रा 10 सितंबर 2024 को एक आंतरिक हैकाथॉन के साथ शुरू हुई, जिसका आयोजन एसआईएच 2024 इवेंट के लिए सिंगल प्वाइन्ट ऑफ कॉन्टैक्ट (एसपीओसी) डॉ. ए. चरण कुमारी के नेतृत्व में इंजीनियरिंग संकाय द्वारा किया गया था। इंजीनियरिंग संकाय की डॉ. विशाखा बघेल और विद्यार्थी स्वयंसेवकों की एक समर्पित टीम द्वारा समर्थित इस कार्यक्रम में 390 विद्यार्थियों की 65 टीमों ने वास्तविक दुनिया की समस्याओं पर चर्चा की, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर डी.ई.आई. का प्रतिनिधित्व करने के लिए 45 टीमों का चयन किया गया। इनमें से दो असाधारण टीमें, अर्थात् 'एजाइल गीक्स' और 'ऐकार्थ्य' प्रतिष्ठित एसआईएच 2024 ग्रैंड फिनाले में आगे बढ़ीं। 'एजाइल गीक्स' ने अपने ''ग्राउंड वाटर लेवल प्रेडिक्टर'' के साथ महत्वपूर्ण जल प्रबंधन मुद्दों को संबोधित किया, जबकि टीम 'ऐकार्थ्य' ने मेंटर डॉ. जीशान और सुश्री प्रिया अस्थाना के मार्गदर्शन में ''स्किल मैट्रिक्स'' विकसित किया, जो एक एआई–संचालित भर्ती सिमुलेशन टूल है। 11 और 12 दिसंबर 2024 को आयोजित ग्रैंड फिनाले में प्रतिभागियों को 36 घंटे की नॉन–स्टॉप कोडिंग मैराथन की चुनौती दी गई, जिसमें माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और

शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान के साथ लाइव बातचीत शामिल थी। टीम 'ऐकार्थ्य' ने अपने उन्नत एआई–संचालित फीचर्स से निर्णायकों को प्रभावित किया, और एआईसीटीई के अध्यक्ष प्रो. टी. जी. सीताराम की अध्यक्षता में आयोजित समापन समारोह में 'संयुक्त विजेता' का खिताब और ₹1 लाख का पुरस्कार जीता। यह जीत, डी. ई.आई. की तीसरी एसआईएच जीत, तकनीकी प्रतिभा को पोषित करने और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देने में इसके नेतृत्व को रेखांकित करती है। डी.ई.आई. के कार्यवाहक निदेशक प्रो. सी. पटवर्धन ने टीमों की रचनात्मकता, अनुकूलनशीलता और वास्तविक दुनिया की चुनौतियों को हल करने की प्रतिबद्धता की सराहना की, और समग्र शिक्षा प्रदान करने और छात्रों को राष्ट्रीय और वैश्विक मंचों पर उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाने के डी.ई.आई. के मिशन पर प्रकाश डाला।

संकाय/कॉलेज समाचार

विज्ञान संकाय

छात्रोपलब्धिः

वनस्पति विभाग के तीन शोधार्थी, कृष्ण कांत, शालू गुप्ता और पर्निका जिंदल, ने 16 से 18 नवंबर 2024 तक अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश में आयोजित 'गुड एग्रीकल्चरल प्रैक्टिसेज़ ऑफ सिलेक्टेड मेडिसिनल प्लांट्स' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया। इस संगोष्ठी में 'Boosting Yield Attributes and Vitality in Damask Rose Employing Plant Growth Regulators' विषय पर कृष्ण कांत को तथा 'पेपर्मिंट, एलीवेटेडः टर्बोचार्जिंग एक्टिव कंपाउंड्स विथ पॉलिएमाइन्स' विषय पर शालू गुप्ता को उनके पोस्टर्स के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

डी.ई.आई. टैक्निकल कॉलेज

छात्रोपलब्धिः

ध्रुव कुमार यादव, प्रथम वर्ष मैकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्र, ने संस्थान का नाम गौरवान्वित किया है। उन्होंने 31 अक्टूबर 2024 से 5 नवंबर 2024 तक कुआला लंपुर, मलेशिया में आयोजित ईस्ट इंडिया डॉज बॉल(dodge Ball) चौंपियनशिप में भाग लिया। ध्रुव अब अगले डॉज बॉल वर्ल्ड कप टूर्नामेंट में भाग लेंगे, जो अप्रैल 2025 में वॉशिंगटन, यूएसए में आयोजित होने वाला है।

एन सी सी गतिविधियां और उपलब्धियां

डी.ई.आई. टैक्निकल कॉलेज में नौवां रक्तदान शिविर आयोजित

डी.ई.आई. टैक्निकल कॉलेज, दयालबाग, आगरा की एन सी सी इकाई, कैप्टन मनीष कुमार (कंपनी कमांडर, 7/1 Coy, 1 यूपी बीएन एन सी सी, आगरा) के नेतृत्व में, 20 नवंबर 2024 को डी.ई.आई. टैक्निकल कॉलेज परिसर में एक दिवसीय रक्तदान शिविर आयोजित किया। यह एन सी सी इकाई, डी.ई.आई. टैक्निकल कॉलेज द्वारा आयोजित नौवां रक्तदान शिविर था। शिविर का आयोजन मानव सेवा चौरिटेबल ब्लड बैंक, खंदारी, आगरा के सहयोग से किया गया।इस दिनभर चलने वाले शिविर में कुल 325 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री वी.पी. मल्होत्रा, प्रिंसिपल, डी.ई.आई. टैक्निकल कॉलेज द्वारा किया गया। शिविर में आने वाले अन्य गणमान्य व्यक्तियों में प्रोफेसर आनंद मोहन, रजिस्ट्रार, डी.ई.आई, और सूबेदार मेजर बलदेव सिंह, 1 यूपी बीएन एन सी सी, आगरा, शामिल थे। सूबेदार मेजर बलदेव सिंह ने संस्थान के सदस्यों द्वारा शिविर के प्रति मिले जबरदस्त उत्साह पर खुशी व्यक्त की। शिविर के दौरान रक्तदान के महत्त्व पर आधारित एक 'नुक्कड़ नाटक' का प्रदर्शन भी किया गया।

यमुना नदी तट पर सफाई अभियान आयोजित

9 दिसंबर 2024 को, डी.ई.आई. की एनसीसी इकाई ने पॉन्टून ब्रिज, नगला छतुरा, आगरा के पास यमुना नदी तट पर एक दिवसीय जल निकाय सफाई अभियान आयोजित किया। इस पहल का उद्देश्य स्वच्छता के महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना था, जिसमें कैडेट्स ने सक्रिय रूप से भाग लेते हुए अभियान का प्रदर्शन किया और स्व–रचित नारे लगाए।

अभियान के दौरान, कैडेट्स ने राहगीरों से बातचीत की और उन्हें स्वच्छ, प्लास्टिक–मुक्त जल निकाय बनाए रखने के महत्त्व और लाभों के बारे में बताया।कुल 70 कैडेट्स, जिनमें लड़के और लड़कियां दोनों शामिल थे, ने अपने अधिकारियों की देखरेख में उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह प्रयास पर्यावरणीय चेतना को बढ़ावा देने और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए समुदाय को सामूहिक जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करने की दिशा में एक कदम था।

एन सी सी कैडेट्स की उल्लेखनीय उपलब्धियां:

- यू.ओ. कृति नौटियाल, तीसरे वर्ष की एन सी सी कैडेट, को डी जी कमेंडेशन 2024 से सम्मानित किया गया, जो एन सी सी में एक कैडेट के लिए सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार है। यह पुरस्कार उनकी समर्पण भावना और उत्कृष्ट प्रदर्शन को मान्यता देता है।इसके अलावा, उन्हें उत्तर प्रदेश निदेशालय की 'बेस्ट कैडेट' (एस डब्ल्यू) घोषित किया गया, जो एन सी सी में उनके अनुकरणीय योगदान और नेतृत्व को उजागर करता है।ये उपलब्धियां उनकी उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं और उनके साथी कैडेट्स के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

- कैडेट ध्रुव देव और कैडेट ऋशांक राणा की टीम, जो दूसरे वर्ष के एन सी सी कैडेट्स हैं, ने उत्तर प्रदेश निदेशालय स्तर पर इंटर–ग्रुप क्विज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके अलावा, कैडेट ध्रुव देव को एन सी सी में उनके असाधारण योगदान के लिए प्रतिष्ठित 'मुख्यमंत्री रजत पदक' से सम्मानित किया गया। ये उपलब्धियां कैडेट्स की समर्पण भावना, टीमवर्क, और उत्कृष्टता को दर्शाती हैं, जो उनकी इकाई और आगरा ग्रुप के लिए गर्व का विषय हैं।

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

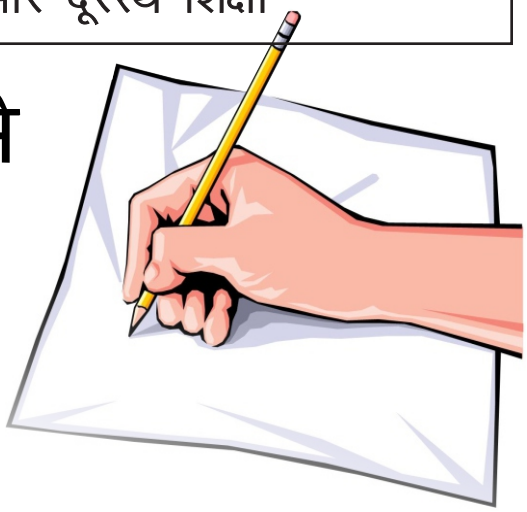

15 दिसंबर 2024 के संडे टाइम्स ऑफ इंडिया में पृथ्वीजीत मित्रा व अन्य द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार विज्ञान से सम्बन्धित एक प्रसिद्ध ब्रिटिश पत्रिका नेचर ने 2023 के दौरान तैयार किए गए शोध पत्रों के बल पर कोलकाता को वर्ष 2024 के लिए भारत की विज्ञान राजधानी का दर्जा दिया है। कोलकाता विश्व स्तर पर 84वें स्थान पर है जो अन्य शहरों से आगे है– बेंगलुरु (85), मुंबई (98), नई दिल्ली (124) और हैदराबाद (184)। कोलकाता के बुनियादी विज्ञान भविष्य के लिए यह शुभ संकेत है कि इसके शोधकर्ताओं ने प्राकृतिक विज्ञान और स्वास्थ्य विज्ञान पत्रिकाओं की तुलना में एडिनबर्ग, हेलसिंकी, जिनेवा और फ्रैंकफर्ट जैसे शहरों में, जिनकी अनुसंधान के लिए पहले से ही अच्छी प्रतिष्ठा है, अधिक योगदान दिया है।

नेचर द्वारा प्रस्तुत 2024 के लिए वैश्विक रिपोर्ट में रोचक और उपयोगी जानकारी दी गई है। इस वैश्विक रिपोर्ट के कुछ अंश नीचे प्रस्तुत हैं:

- चीन का अनुसंधान उत्पादन 2024 में तेजी से बढ़ना जारी रहेगा और नवीनतम 'नेचर इंडेक्स ग्लोबल साइंस सिटी' रैंकिंग के अनुसार बीजिंग दुनिया के शीर्ष विज्ञान शहर के रूप में अपना स्थान बनाए रखेगा।
- चीनी राजधानी ने इस रैंकिंग में अपना नेतृत्व मजबूत किया है और उसके बाद शंघाई है, जिसने न्यूयॉर्क को पीछे छोड़ दिया है। नेचर इंडेक्स डेटा ने इस साल एक महत्वपूर्ण बदलाव दिखाया है, जिसमें शीर्ष 20 शहरों में से आधे अब चीन के हैं।
- शायद इस साल विज्ञान के अग्रणी शहरों में सबसे दिलचस्प विकास चीनी प्रांतीय राजधानियों का स्पष्ट उदय है। चीन की सफलता को आगे बढ़ाने वाले एन्जिन उसके शहर हैं। विदेशी शोधकर्ताओं को आकर्षित करने और चीनी शोधकर्ताओं को घर वापस लाने के लिए सरकारी पहल, नवाचार क्षेत्रों में चीन के प्रदर्शन को बढ़ावा देने में मदद कर रही है, साथ ही विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों को पेटेंट और अधिक उद्योग सहयोग के लिए आवेदन करने के लिए प्रोत्साहन भी दे रही है। आज चीन पेटेंट आवेदनों की संख्या में दुनिया में सबसे आगे है और 2022 में अमेरिका की तुलना में चार गुना अधिक एआई–संबंधित पेटेंट प्राप्त कर रहा है। चीनी शहर सौर ऊर्जा जैसी विशेषज्ञ तकनीकों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। दुनिया भर में बिकने वाली इलेक्ट्रिक कारों में से आधे से अधिक चीन में बनी होती हैं।
- यह ध्यान रखना समझदारी होगी कि 'मेड इन चाइना 2025' ने चीन के शहरों में वैज्ञानिक विकास को कैसे बढ़ावा दिया। इस नीति ने कुछ क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया है।
- इस 'मेड इन चाइना' पहल के तहत चीन ने सभी प्रमुख उद्योगों में 70% आत्मनिर्भर बनने का लक्ष्य रखा है। इसके कई लक्ष्य पूरे हो चुके हैं, खास तौर पर अक्षय ऊर्जा (Renewable Energy) और बायो फार्मास्यूटिकल्स के क्षेत्र में।
- चीन के विश्वविद्यालय इसके 'मेड इन चाइना 2025' लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वे उच्च प्रौद्योगिकी उद्योगों को आवश्यक प्रतिभा और विशेषज्ञता प्रदान करते हैं।

नेचर द्वारा की गई उपरोक्त रैंकिंग एक्सरसाइज से पता चलता है कि देश की आर्थिक वृद्धि का श्रेय मुख्य रूप से शिक्षा पर इसके फोकस को दिया जा सकता है – विशेष रूप से उच्च शिक्षा, जो व्यावहारिक कौशल और विभिन्न प्रतिभाओं वाले कार्यबल को विकसित करने में मदद करती है। इसके लिए, विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम को इस तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि यह उच्च तकनीक उद्योग की जरूरतों के अनुसार प्रतिभा और विशेषज्ञता प्रदान कर सके। अध्ययन द्वारा उठाया गया एक और महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि विकास प्रक्रिया को देश के सभी हिस्सों को कवर करना चाहिए ताकि इसके उपलब्ध मानव संसाधन का अधिकतम उपयोग किया जा सके और इसलिए यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि इसके सभी प्रांत या राज्य अधिकतम संभव सीमा तक विकसित हों।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

डीईआई का ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमः छात्र नामांकन और छात्र प्रोफाइल पर डेटा 2024–25 सत्र के लिए

2024–25 सत्र के दौरान, यूजी / पीजी डिग्री स्तर के यूजीसी–अधिकृत ऑनलाइन कार्यक्रम पर्यवेक्षित ऑनलाइन मोड में पेश किए गए, जबकि सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम ऑफलाइन मोड में पिछले कई वर्षों की तरह आयोजित किए जा रहे हैं।

2024–25 सत्र में कुल छात्र नामांकन 1219 था, जिसमें से 685 छात्र यूजी और पीजी डिग्री स्तर के कार्यक्रमों में और 534 छात्र सर्टिफिकेट स्तर के कार्यक्रमों में नामांकित थे, जिसमें एक स्टैंड–अलोन मॉड्यूलर कार्यक्रम भी शामिल है। छात्र नामांकन का डेटा कार्यक्रम–वार और भौगोलिक वितरण के संदर्भ में नीचे प्रस्तुत किया गया है, इसके बाद श्रेणी, क्षेत्र और लिंग के संदर्भ में छात्र प्रोफाइल पर डेटा प्रस्तुत किया गया है।

(i). छात्र नामांकन :

Programme-wise	
BBA 1st Yr	153
BBA 2nd Yr	80
BBA 3rd Yr	104
B.Com (Hons) 1st Yr	108
B.Com (Hons) 2nd Yr	54
B.Com (Hons) 3rd Yr	83
B.A 1st Yr	11
B.A 2nd Yr	5
B.A 3rd Yr	8
M.Com 1st Yr	24
M.Com 2nd Yr	18
M.A Theology 1st Yr	29
M.A Theology 2nd Yr	8
DDT	159
Electrician	95
OACO	73
MVM (4W)	57
TDP	46
Cutting & Sewing	35
Wireman	31
MOM & SP	12
MVM (2W)	8
Block Printing	18

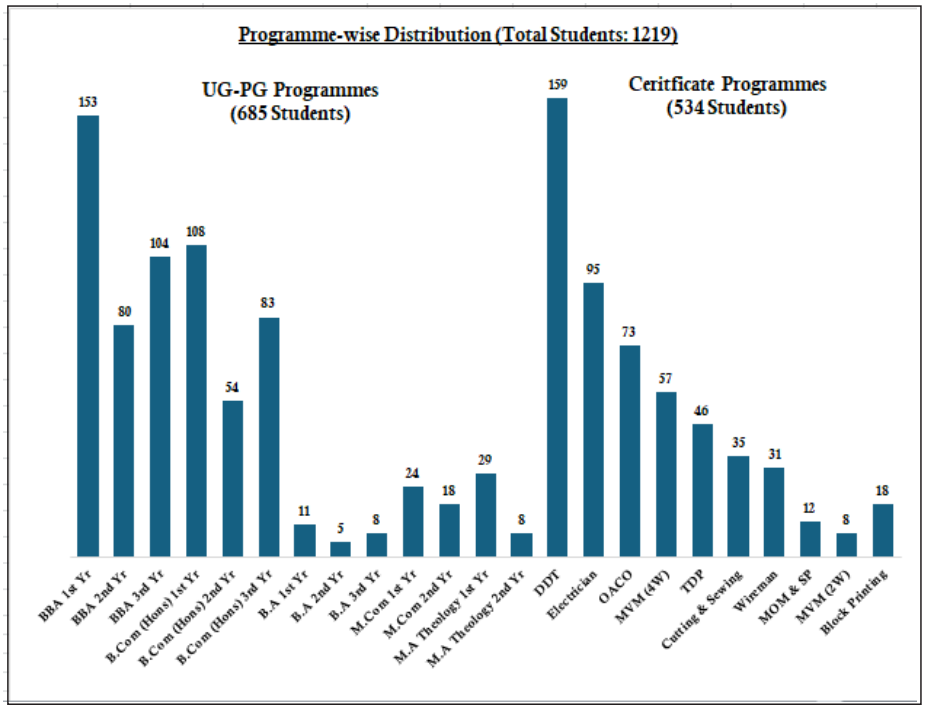

State-wise Distribution	
U.P.	650
ANDHRA PRADESH	120
PANJAB	116
MADHYA PRADESH	98
BIHAR	38
KARNATAKA	32
JHARKHAND	26
HARYANA	25
MAHARASHTRA	24
DELHI	19
GUJARAT	17
TAMIL NADU	15
JAMMU & KASHMIR	14
Dubai	12
UTTARAKHAND	11
WEST BENGAL	2

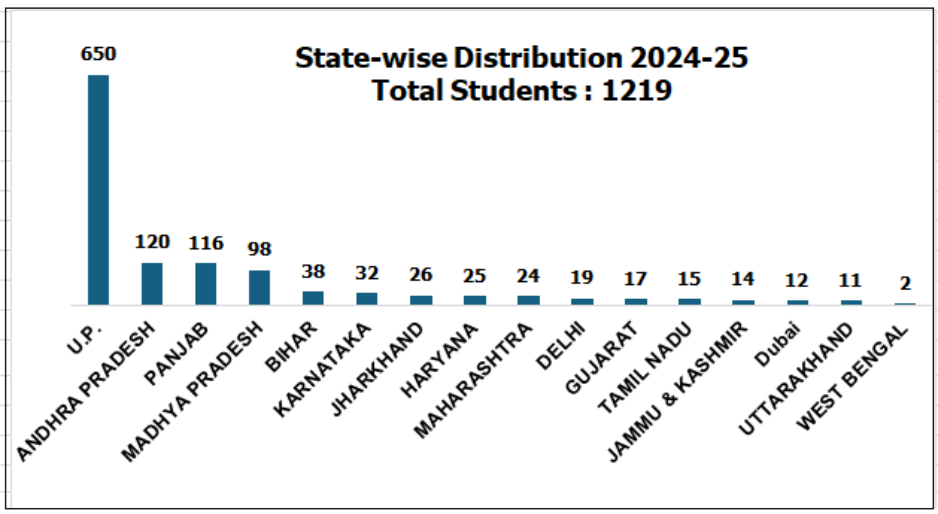

(ii). छात्र प्रोफाइल:

क) श्रेणीवार

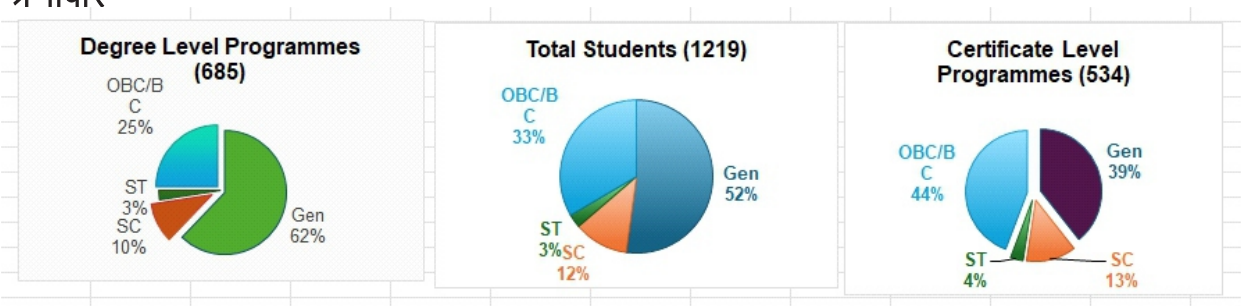

ख) क्षेत्रवार

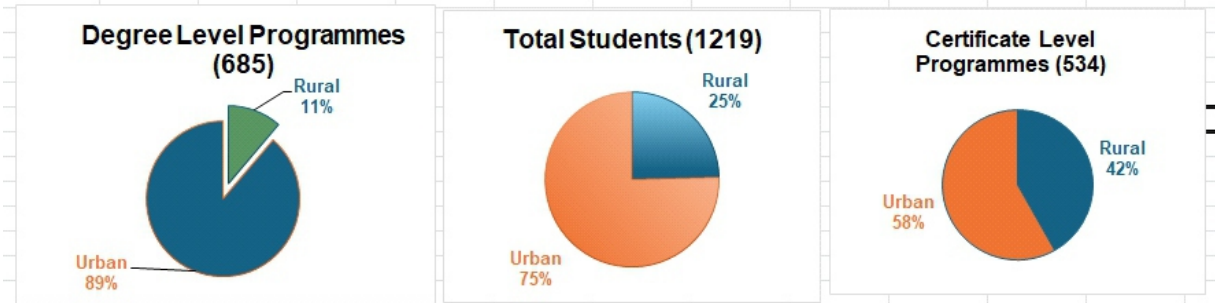

ग) लिंग–वार

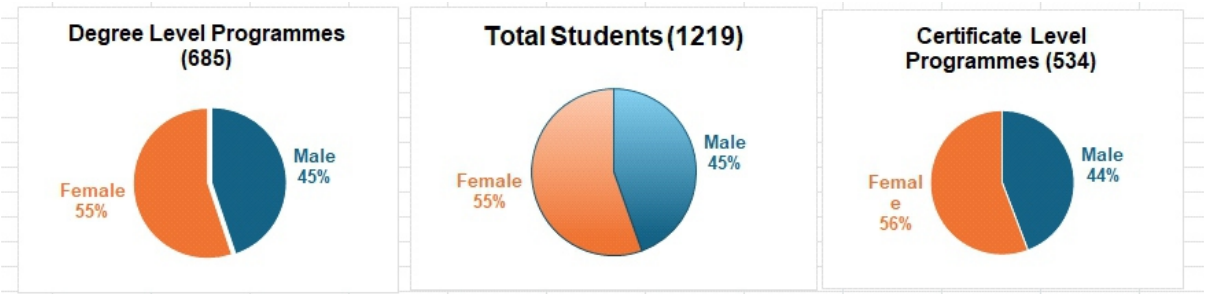

ऊपर दर्शाए गए डिग्री–स्तर और सर्टिफिकेट–स्तर के कार्यक्रमों में छात्र नामांकन वितरण के संबंध में, निम्नलिखित उल्लेखनीय अवलोकन किए जा सकते हैं:

(क) प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रमों में आरक्षित श्रेणी के छात्रों का नामांकन अपेक्षाकृत अधिक है।

(ख) प्रमाण–पत्र स्तर के कार्यक्रमों में ग्रामीण क्षेत्रों से काफी अधिक विद्यार्थी आते हैं।

(ग) डिग्री स्तर और प्रमाण–पत्र स्तर के कार्यक्रमों में लिंग वितरण महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के हमारे प्रयासों की पुष्टि करता है।

उपरोक्त अवलोकन (ए) और (बी) हमारे सामान्य अनुभव के अनुरूप हैं अर्थात प्रमाण पत्र स्तर के कार्यक्रमों में आरक्षित श्रेणी के छात्रों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है और ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों की संख्या काफी अधिक है। वे पुष्टि करते हैं कि डिग्री और सर्टिफिकेट स्तर के कार्यक्रम अच्छी तरह से परिभाषित हैं। अवलोकन (सी) में महिला छात्रों की संख्या सामान्य से अधिक है (आमतौर पर यह 40% होती है) जो एक स्वागत योग्य प्रवृत्ति है।

केंद्रों से समाचार

डीईआई केंद्रों पर नवाचार, गुणवत्ता और मूल्यांकन दिवस 2024 पर रिपोर्ट

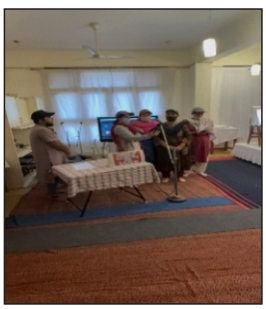

डीईआई के बैंगलोर केंद्र द्वारा 31 अक्टूबर 2024 को लगातार ग्यारहवें वर्ष सफलतापूर्वक नवाचार, गुणवत्ता और मूल्यांकन दिवस 2024 मनाया गया । दयालबाग से समारोह के वीडियो प्रसारण के बाद इसे हाइब्रिड वीडियो मोड में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना से हुई, जिसके बाद केंद्र प्रभारी प्रोफेसर टीवीएसएन मूर्ति ने संक्षिप्त स्वागत भाषण दिया। इसके

बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। दो रोचक और जानकारीपूर्ण प्रस्तुतियाँ श्री विनेश चौहान द्वारा ''एआई का स्वर्ण युग'' और श्री सौरभ श्रीवास्तव द्वारा ''गिव बैक'' दर्शकों द्वारा खूब सराहा गया। अंत में, श्री साहेज ग्रोवर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर को संकाय सदस्यों, छात्रों और सत्संग समुदाय के सदस्यों ने बैंगलोर शाखा द्वारा बहुत अच्छे तरीके से मनाया।

जनकपुरी सूचना केन्द्र , मित्रों, दिल्ली ने अपनी शुरुआत 15 अगस्त 2024 को की। नवाचार, गुणवत्ता, मूल्य (आईक्यूवी) दिवस मनाने के लिए केंद्र का यह पहला परिचालन था। छात्र और सभी संकाय सदस्यों को उनके परिवारों के साथ आमंत्रित किया गया था। छात्रों ने अपने कलात्मक कौशल का प्रदर्शन करते हुए प्रवेश द्वार पर एक रंगीन और सुंदर रंगोली का प्रदर्शन कर उत्सव को और अधिक उत्साहपूर्ण बना दिया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना से हुई, तत्पश्चात स्वागत हुआ तत्पश्चात ओएसीओ कोर्स के मेंटर श्री प्रमोद तलवार का भाषण हुआ। उन्होंने उपस्थित सभी लोगों का अभिवादन किया और संक्षेप में IQV का अर्थ समझाया।

श्री राकेश कुमार केन्द्र प्रभारी ने उपस्थित लोगों को डीईआई की शिक्षा नीति तथा इसके तीन आधार स्तंभों – नवाचार, गुणवत्ता और मूल्यांकन के बारे में जानकारी दी। उन्होंने डीईआई के विजन और मिशन वक्तव्य के साथ इसके संबंध के बारे में भी बताया। अतिथियों के लाभ के लिए उन्होंने दिल्ली के तीन सूचना केंद्रों में पेश किए जा रहे व्यावसायिक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों और जनकपुरी केंद्र में चल रहे ओएसीओ पाठ्यक्रम की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी दी। इसके बाद श्री उदय शरण ने 'मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली' पर एक संक्षिप्त व्याख्यान दिया। समारोह अभिभावकों और छात्रों के लिए दो मिनट के भीतर 15 हिंदी वाक्यांशों को पूरा करने की प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। उन्होंने इस प्रतियोगिता में पूरे मन से और बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। बच्चों के विभिन्न आयु समूहों ने पिरामिड निर्माण (आयु 3–5 वर्ष) और सस्पेंडेड टेनिस बॉल गेम (आयु 5 और उससे अधिक) जैसे विभिन्न खेलों का आनंद लिया। श्री प्रमोद तलवार द्वारा एक ओरिगेमी क्लास भी आयोजित की गई, जिसने छात्रों की रुचि को आकर्षित किया। यह बच्चों के लिए एक व्यावहारिक और कौशल आधारित शिक्षा थी। छात्रों और उनके अभिभावकों को सूचना केंद्र के साथ अपने अनुभव पर प्रतिक्रिया देने के लिए भी प्रेरित किया गया, जो काफी उत्साहजनक था। सभी को नाश्ता भी परोसा गया। इससे सभी को एक–दूसरे से व्यक्तिगत स्तर पर घुलने–मिलने और बातचीत करने का अवसर मिला।

जनजातीय नेताओं का उत्सव मनाना: बिरसा मुंडा की विरासत के सम्मान हेतु समारोह

भारत सरकार ने ''ज्ञान के प्रसार'' और महान आदिवासी नेताओं के बारे में जागरूकता। पर एक पहल की शुरूआत की। जनकपुरी सूचना केंद्र, मित्राँव, दिल्ली, में नवंबर 2024 को जश्न मनाने और प्रदर्शित करने के लिए सबसे सम्मानित आदिवासी नेताओं में से एक का जीवन, बिरसा मुंडा, जो मुंडा जनजाति से थे पर एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वह एक लोक नायक, आदिवासी प्रतिरोध के प्रतीक थे, और उन्होंने विशाल औपनिवेशिक ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ एक विद्रोही आंदोलन का नेतृत्व किया था। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उल्लेखनीय योगदान दिया। स्किट के रूप में प्रस्तुति ने बिरसा मुंडा के बचपन से लेकर एक कार्यकर्ता तक के जीवन पर प्रकाश डाला, जिन्होंने अपने समुदाय को उनके अधिकारों और दमनकारी ब्रिटिश शासन से आजादी के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया था। स्किट में एक अमिट छाप छोड़ी और उनकी विरासत का पालन करने के लिए एक जागृति छोड़ी। प्रबंधन की पहल पर, पूरे कार्यक्रम की परिकल्पना, नेतृत्व और मार्गदर्शन एक संकाय सदस्य श्रीमती अलका तलवार ने किया। इस स्किट की परिकल्पना एक नुक्कड़ नाटक के मॉडल पर की गई थी क्योंकि यह आदिवासी लोगों के बीच कला का एक लोकप्रिय रूप है। सभी छात्रों के पास निभाने के लिए एक भूमिका थी और उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, कि यह उनका पहला मंच प्रदर्शन था। छात्रों ने उत्साह के साथ भाग लिया और आदिवासी शैली में कपड़े पहने। नुक्कड़ नाटक का समापन स्वतंत्रता आंदोलन के लोकप्रिय नारे, " 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' और 'भारत माता की जय' " के साथ हुआ। एक छात्र ने मधुर स्वर में ईश्वर की स्तुति में एक भजन गाया। दर्शकों में माता–पिता, संकाय सदस्य और परिवार शामिल थे। कार्यक्रम में छात्रों द्वारा भारतीय आदिवासीध्लोक नृत्य भी शामिल थे। पैंतीस मिनट से अधिक समय तक चले पूरे कार्यक्रम की सभी ने खूब सराहना की।

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के पूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

छांदोग्य उपनिषद, VII, 26, 2. में कहा गया है, आहार शुद्धौ सत्त्वसुद्धिः , जिसका अनुवाद है। 'भोजन की शुद्धता से मन की शुद्धता आती है।' यह अतीत ज्ञान भोजन और जीवन के बीच अटूट बंधन को मजबूती से स्थापित करता है। पर्यावरण, नैतिक लैक्टो शाकाहारी आहार के स्वास्थ्य लाभों को अब नकारा नहीं जा सकता। जैसे–जैसे दुनिया धीरे–धीरे शाकाहार की ओर बढ़ रही है, वैश्विक भूख की समस्या पर काबू पाने की हमारी संभावनाएँ बेहतर होती जा रही हैं। दयालबाग में, सहकारी कृषि पारिस्थितिकी का नियमित रूप से दो शिफ्टों में अभ्यास किया जाता है, एक सुबह और दूसरा शाम को। यह आज दयालबाग जीवन शैली का एक अनिवार्य और अभिन्न अंग है – नवाचार पर आधारित, प्रकृति के साथ सामंजस्य, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, आत्मनिर्भरता, सादा जीवन और उच्च विचार का दर्शन, बेहतर सांसारिकता और स्वास्थ्य देखभाल आवास का आदर्श। जब 1929 में दयालबाग डेयरी फार्म की औपचारिक सीपना हुई, तो परम पूज्य हुजूर साहबजी महाराज ने अपने उद्घाटन भाषण में इसका उद्देश्य बताते हुए प्रसन्नता व्यक्त की थी:

''हमारा मानना है कि दूध, दही और मक्खन इस देश के लोगों के लिए सबसे अच्छे और सबसे फायदेमंद आहार हैं। इनके सेवन से न केवल मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा रहता है, बल्कि उसका मस्तिष्क और हृदय भी साफ रहता है। जिससे सूक्ष्म बातों को समझने में सक्षम और बड़ी आसानी से आध्यात्मिक अभ्यास कर सकते हैं.....''

पिछले कई सालों से डेयरी फार्म/गौशाला चौबीसों घंटे काम कर रही है, और दयालबाग कॉलोनी और दयालबाग संस्थानों में पढ़ने वाले छात्रों की दूध की जरूरतों को पूरा करती है। आज दयालबाग गौशाला में गाय, भैंस, बकरी और ऊँट हैं। स्वस्थ जैविक उत्पादों के साथ दयालबाग के खेतों और मैदानों से प्राप्त जैविक उपज पर आधारित स्वस्थ आहार का आनंद लेने पर समुदाय स्वयं को धन्य महसूस करता है, जिसे परमपिता परमात्मा की दयालु उपस्थिति से पवित्र किया गया है।

हम aadeisnewsletter@gmail-com पर आपकी टिप्पणियों और योगदानों की प्रतीक्षा कर रहे हैं !

सस्टेनेबिलिटी कप 2024: एक रिपोर्ट

अपूर्व नारायण
एसोसिएट प्रोफेसर, वेस्टर्न ओन्टेरियो विश्वविद्यालय, कनाडा

सतत विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय अनुप्रयुक्त प्रणाली विज्ञान केंद्र (ICASSSD) के सहयोग से संचालित पहला मैत्रीपूर्ण क्रिकेट मैच – 'सस्टेनेबिलिटी कप', 8 दिसंबर, 2024 को लंदन, ओंटारियो के केंद्र में आयोजित किया गया – जिसे प्यार से फॉरेस्ट सिटी के रूप में जाना जाता है, जो कि प्रसिद्ध वेस्टर्न ओंटारियो विश्वविद्यालय का घर भी है। इस कार्यक्रम को दयालबाग रा धा स्व आ मी सत्संग एसोसिएशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका (DRSANA) द्वारा अपनी टोरंटो शाखा (कैम्ब्रिज, ON में स्थित, लंदन, ON से लगभग 99 किमी दूर) के माध्यम से समर्थन दिया गया था।)। यह मैच सिर्फ दो टीमों के बीच की प्रतियोगिता से कहीं ज़्यादा था, यह हमारे ग्रह की रक्षा करने की हमारी साझा जिम्मेदारी का एक शक्तिशाली अनुस्मारक था। इस आयोजन को भौतिक ब्रह्मांड के दायरे से परे ले जाने वाली बात यह थी कि हमें इस खेल को हमारे परमपिता, वक्तध्वर्तमान संत सतगुरु, परम पूजनीय प्रोफेसर प्रेम सरन सत्संगी साहब और परम आदरणीय रानी साहिबा की मौजूदगी में आयोजित करने का अवसर मिला।

1878 में स्थापित, वेस्टर्न ओन्टेरियो विश्वविद्यालय – एक वैश्विक नेता शिक्षा और अनुसंधान, कनाडा में स्थिरता में नंबर 1 स्थान पर है टाइम्स यूनिवर्सिटी रैंकिंग। ICASSSD प्रोफेसर अपूर्व नारायण के सहयोग से जो वेस्टर्न ओन्टेरियो विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर और दयालबाग शैक्षणिक संस्थान वर्तमान में लगभग 4 स्नातक छात्रों की और एक पोस्ट डॉक्टोरल फैलोकी मेजबानी कर रहा है स्नातक छात्र और 1 पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो के साथ अध्ययनरत हैं और दयालबाग वे ऑफ लाइफ के पर स्थिरता की दिशा में गतिशील टिकाऊ समाधान खोजने का अनुसंधान कर रहे हैं। ICASSSD भी गतिशील टिकाऊ समाधान विकसित करने पर वार्षिक शोध स्कूल यू. जी. /पी. जी. और हाई स्कूल के छात्रों के लिए।

कार्यक्रम की शुरुआत टोरंटो शाखा की सभी वीरांगनाओं (आयु 13 वर्ष और उससे अधिक) के मार्च पास्ट से हुई।

परेड की कमान अमी सत्संगी ने संभाली, उनके बाद प्रे. व. दया कुमार ने आईसीएएसएसएसडी का झंडा थाम रखा था। सुमीरा अल्लामराजू और दरस सत्संगी ने क्रमशः भारत और कनाडा के झंडे थामे रखे थे, और बाकी परेड उनके पीछे थी।

खिलाड़ियों को एक उत्साहवर्धक सांस्कृतिक प्रदर्शन से प्रोत्साहित किया गया टोरंटो शाखा के सुपरमैन द्वारा एक सुंदर नृत्य कार्यक्रम आयोजित किया गया ' लहरा दो, दृढ़ विश्वास का परचम लहरा दो गीत पर जिमनास्टिक का शानदार और ऊर्जावान प्रदर्शन किया गया।' .

मैच के मुख्य अंशः

- 8 ओवर का सीमित मैत्रीपूर्ण क्रिकेट मैच।
- 'नेचर' और 'इकोलॉजी' टीमों के कप्तान प्रे. भ. अनिल थे सुरवरपु और प्रे. भ. रोहन कपूर थे।
- टीम 'इकोलॉजी' ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया, अंत में रन बनाए 6 विकेट पर 54 रन.
- मैन ऑफ द मैचः पंजाब सूर्यकांत सस्सान ने 7 गेंदों पर 15 रन बनाए और 1 विकेट लिया।
- सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजः पंजाब के नितिन नारद ने 19 रन बनाए जो मैच में किसी भी बल्लेबाज द्वारा बनाए गए अधिकतम रन थे।
- सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजः प्रे. भ. दिनेश सैनी, 1 ओवर में 4 विकेट लिए।
- सर्वश्रेष्ठ क्षेत्ररक्षकः प्रे. भ. उदय देवुलपल्ली, 4 चौके और 6 सहित 4 चौके रोके।
- प्रे. भ. अर्श चौधरी विकेटकीपर थे और उन्होंने दो रन आउट किए।
- टीम 'इकोलॉजी' ने गेम जीत लिया, जिसमें टीम 'नेचर' ने 8 ओवर में 1 विकेट पर 47 रन बनाए।

इस कार्यक्रम में श्री सैम चोपड़ा, अध्यक्ष, साउथ एशियन्स इन ओंटारियो (एक गैर–लाभकारी संगठन) सहित 70 लोगों ने भाग लिया। कमेंटेटर प्रे. भ. राजन शर्मा और प्र. बहन. रुनझुन सरन नारायण ने पूरे खेल के दौरान दर्शकों को उत्साहपूर्वक बांधे रखा। दर्शकों ने खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया। मैच के दौरान खिलाड़ियों ने कई बार ' रा धा स्व आ मी ' के ऊर्जावान मंत्रों का उच्चारण किया।

टोरंटो शाखा की महिला एसोसिएशन ने उत्साहपूर्वक सभी उपस्थित लोगों के लिए सरसों के पत्तों से बने नाश्ते और भोजन तैयार किए, जिन्हें बायोडिग्रेडेबल टिकाऊ सामग्री से बने बक्सों में परोसा गया। टोरंटो शाखा की शाखा सचिव प्र. बहन. उषा शर्मा द्वारा खिलाड़ियों को सस्टेनेबिलिटी ट्रॉफी और पुरस्कार प्रदान किए गए।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण तब था जब परम पूज्य प्रोफेसर प्रेम सरन सत्संगी साहब ने खेल के आंकड़ों के बारे में जानकारी ली और प्रसन्नतापूर्वक कहा कि तीन पुरस्कार दिए जाएंगे: सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज और सर्वश्रेष्ठ क्षेत्ररक्षक। अंत में "इसे बनाए रखो! जीतो, जीतो, हर तरह से"। पूरे स्टेडियम में पूरे जोश और उत्साह के साथ " रा धा स्व आ मी " की गूंज सुनाई दी। परमपिता के दयालु आशीर्वाद ने दर्शकों और खिलाड़ियों को परमपिता परम श्रद्धेय प्रो. प्रेम सरन सत्संगी साहब के नेतृत्व में मानवता की सेवा में अडिग रहने आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया

रा धा स्व आ मी

रा धा स्व आ मी सत्संग सभा गौशाला: लैक्टो–शाकाहार को बढ़ावा देना

प्रखर मेहरा
एमबीएम बैच 2002, बी कॉम (ऑनर्स) बैच 2000, डीईआई
वर्तमान में, सेवक (प्रबंधक), आरएसएस गौशाला दयालबाग, AADEIs के आजीवन सदस्य

रा धा स्व आ मी सत्संग सभा गौशाला की स्थापना वर्ष 1926 में हुई थी और वर्तमान में इसमें 1060 से अधिक गाय और भैंस, 53 बकरियां और 12 ऊंट हैं। यह सामुदायिक भागीदारी का एक अनूठा मॉडल है जिसमें दयालबाग शैक्षणिक संस्थान, डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी, कृषि कार्य और पशुपालन एक साथ मौजूद हैं, सभी समुदाय द्वारा समर्थित हैं। गौशाला पशुधन, और जो लोग यहाँ निस्वार्थ सेवा करते हैं, वे वास्तव में परम पूज्य दयालु हुजूर और परम आदरणीय रानी साहिबा जी की दयालु यात्राओं से धन्य हैं, जो हमारे लिए ऊर्जा का सच्चा स्रोत हैं। हम सभी जानवरों और समुदाय के लिए यह सेवा कर रहे हैं।

गौशाला दयालबाग के समुदाय और संस्थाओं को जीवन का अमृत दूध उपलब्ध कराती है। टोंड दूध के लिए 18 रुपये प्रति लीटर की किफायती कीमत पर दूध उपलब्ध कराया जाता है। गाय के गोबर और मूत्र का उपयोग खाद के रूप में और खाद्य सामग्री तैयार करने के लिए किया जाता है। प्राकृतिक कृषि पद्धतियाँ जो दयालबाग भूमि के हर इंच पर रसायन मुक्त खेती को सक्षम बनाती हैं।

गौशाला वैज्ञानिक सिद्धांतों, आधुनिक तकनीकों पर काम करती है और प्रजनन, आहार, स्वास्थ्य और स्वच्छता तथा सुविधा प्रबंधन के चार प्रमुख स्तंभों के आसपास प्राचीन ज्ञान का मिश्रण करती है। रा धा स्व आ मी मंत्र बजाकर संगीत चिकित्सा , व्यायाम के लिए दूध देने वाले झुंड को प्रतिदिन चराना, गतिविधि निगरानी के लिए सेंसर के साथ मवेशियों के नामों की पहचान करना, डेटा प्रदान करना विश्लेषण, सुबह के समय खेत पर सुपरह्यूमन बच्चों और क्षेत्रीय स्वयंसेवकों के लिए गर्म दूध, पोषण योजना और दूध जिसमें गाय, भैंस, बकरी और ऊंट का दूध शामिल है और वह भी बाजार मूल्य के एक तिहाई से भी कम पर, जो अंतिम, सबसे कम आय वाले व्यक्ति के लिए वहनीय है। सबसे निचले और खोए हुए लोग कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो गौशाला को अद्वितीय बनाते हैं।

पिछले दशक में गौशाला ने दयालबाग जीवन शैली के सिग्मा सिक्स IQV&A मॉडल को अपनाया है, जिसे परम पूज्य हुजूर ने आकार दिया है। और इसलिए गौशाला ने नवाचार, वायु गुणवत्ता, जल गुणवत्ता, शिक्षा, कृषि एवं डेयरी परिचालन एवं महिला सशक्तिकरण इस दिशा में प्रयास किया है।

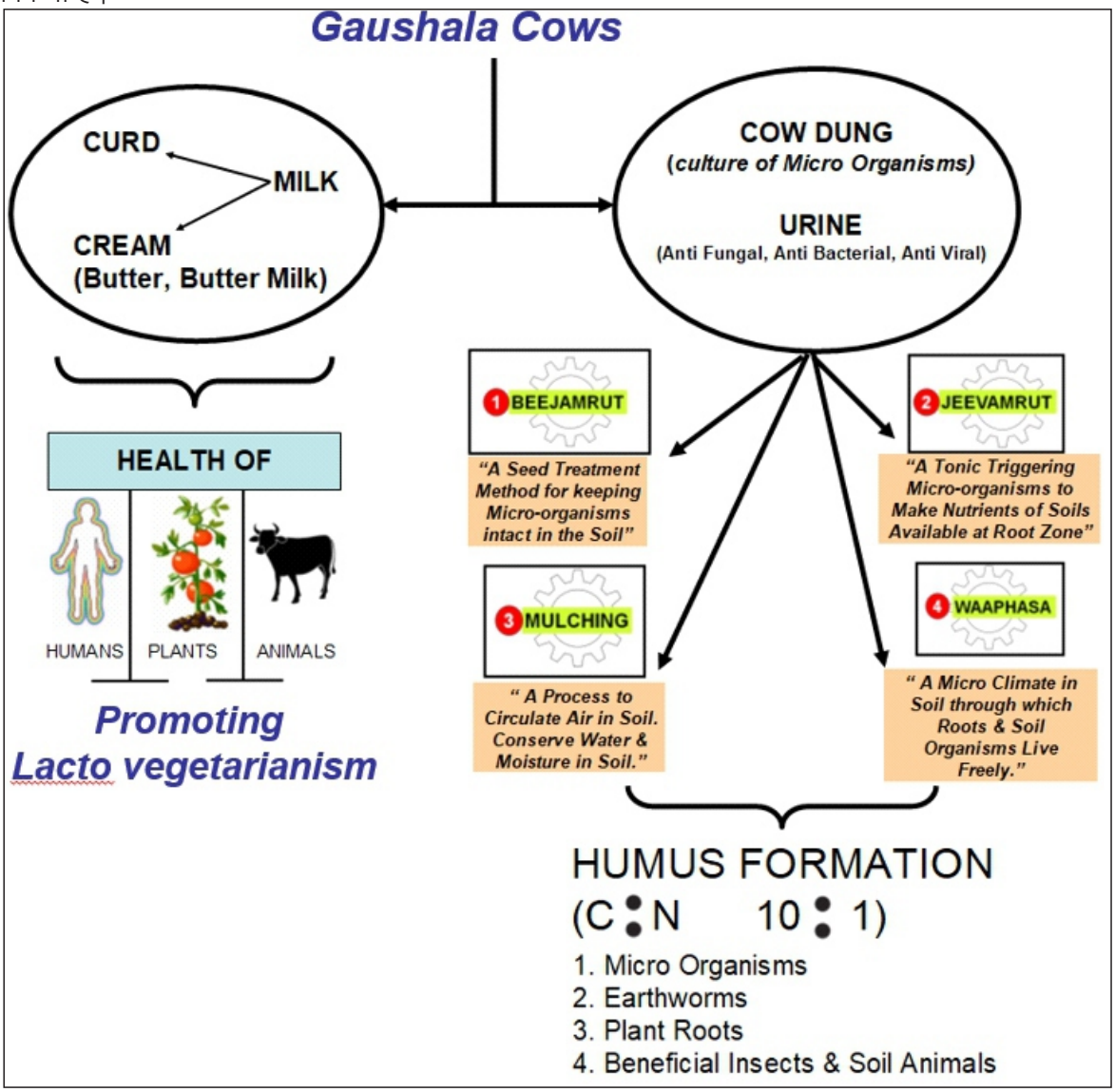

गौशाला से प्राप्त दूध प्रोटीन और अन्य मूल्यवान विटामिन और खनिजों का मुख्य स्रोत है जो लैक्टो–शाकाहार को बढ़ावा देता है। गायों, भैंसों, ऊँटों और बकरियों से निरंतर दूध उत्पादन संसाधनों पर दबाव डाले बिना उच्च गुणवत्ता वाले दूध की उपलब्धता सुनिश्चित करता है। अपनाई जा रही प्राकृतिक खेती की पद्धतियाँ खाद के बिना फसल उगाने के लिए, केवल गाय के गोबर और मूत्र जैसी सामग्री का उपयोग किया जाता है। एक गाय को दफनाने के 6–8 महीने बाद प्राप्त समाधि खाद में 6 एकड़ भूमि के लिए सूक्ष्म पोषक तत्व प्रदान करने की क्षमता होती है।

इसलिए, गौशाला दयालबाग इको–हेल्थ केयर हैबिटेट का एक अभिन्न अंग है। निरंतर दूध उत्पादन और खेती की प्रथाओं में लैक्टो–शाकाहार को बढ़ावा देने के लिए व्यापक पैमाने पर कार्यान्वयन की क्षमता है, जिसके माध्यम से 2050 तक 12 बिलियन लोगों को भोजन कराया जा सकता है।

साहित्यिक अध्ययन में लैक्टो–शाकाहार पर शोध शुरू करना

गुरप्यारी भटनागर

पीएचडी, एमए अंग्रेजी (बैच 1996), दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट

वर्तमान में, शारदा विश्वविद्यालय, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल, अंग्रेजी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसरय नोएडा सूचना केंद्र में बीबीए ऑनलाइन कार्यक्रम के मेंटर

अंग्रेजी साहित्य के संकाय सदस्य के रूप में, जब मैंने हाल ही में AADEIs/AAFDEIs अनुभाग के मुख्य संपादक द्वारा लैक्टो शाकाहारवाद पर लेख के लिए आमंत्रण देखा, तो मैं साहित्य के संदर्भ में इस विषय पर विचार करने के लिए आकर्षित हुई। यह जानना काफी दिलचस्प था कि शाकाहारवाद अंग्रेजी साहित्य में एक महत्वपूर्ण रूप से कम शोध वाला विषय बनकर उभरा। यह चिंतन, हालांकि शुरू में निराशाजनक था, लेकिन इसने एक आकर्षक शोध अंतराल और उससे भी महत्वपूर्ण रूप से साहित्यिक जांच के लिए एक अवसर को उजागर किया।

अंग्रेजी साहित्य की विदुषी के रूप में, शास्त्रीय दार्शनिकों में मेरी हमेशा से रुचि रही है। हालाँकि, यह अभी ही पता चला है कि पाइथागोरस पश्चिम में शाकाहार की वकालत करने वाले पहले दार्शनिक थे। उन्होंने शाकाहार के पक्ष में तीन तर्क दिए। पहला, जानवर में भी मनुष्य जैसी आत्मा होती है। दूसरे, जानवरों को मारना और मांस खाना आत्मा को दूषित करता है और इसलिए, आत्मा का परमात्मा से मिलन नहीं हो पाता। और तीसरा, मांस खाने से मनुष्य आक्रामक हो जाते हैं और एक दूसरे के खिलाफ युद्ध में शामिल हो जाते हैं। इसी तरह, प्लेटो के 'रिपब्लिक' में, सुकरात का सुझाव है कि आदर्श पोलिस के लिए मनुष्य और पशुओं का सामंजस्यपूर्ण ढंग से सह–अस्तित्व में रहना आवश्यक है, और इसलिए लोगों को शाकाहार का समर्थन करना चाहिए।

जबकि शाकाहार का दर्शन शेली और बायरन जैसे रोमांटिक कवियों के लिए भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है, दुर्भाग्य से, यह रोमांटिकवाद का अक्सर अनदेखा किया जाने वाला पहलू है। शेली ने अपने ग्रंथ 'एविंडिकेशन ऑफ नेचुरल डाइट' में प्राकृतिक आहार को पशु मांस से मुक्त बताया है, जहाँ वह इसे शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के स्वास्थ्य के लिए जरूरी मानते हैं। वे कहते हैं, ''आहार में सुधार का फायदा किसी भी दूसरे फायदे से ज्यादा है। यह बुराई की जड़ पर प्रहार करता है...हर आदमी, मानो, रूप बनाता है अपने ईश्वर को अपने चरित्र से लेकर साधारण आदतों वाले व्यक्ति की दिव्यता तक, कोई भी भेंट उसके प्राणियों की खुशी से अधिक स्वीकार्य नहीं होगी। (1884, पृ.24)

अंग्रेजी साहित्य में उपरोक्त जैसे और भी उदाहरण हैं, लेकिन वे दुर्लभ और बिखरे हुए हैं। वास्तव में, गूगल सर्च से इस क्षेत्र में बहुत कम व्यापक रूप से शोध किए गए ग्रंथ मिलते हैं। एक उल्लेखनीय उदाहरण थियोफिलस सावा का 'साहित्य में शाकाहार और शाकाहारवाद' हाल ही में कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित 'प्राचीन 21वीं सदी तक' है। इसी तरह, मेरे शोध के दौरान मेरे सामने आने वाले लेखों का एकमात्र महत्वपूर्ण भंडार द्विवार्षिक पत्रिका 'एनिमल एथिक्स' है, जो हालांकि साहित्य से विशेष रूप से संबंधित नहीं है, लेकिन इस विषय पर एक सार्वजनिक बहस प्रस्तुत करती है इस विषय पर। इस महत्वपूर्ण विषय पर ध्यान न दिए जाने से अंग्रेजी साहित्य में इसे और अधिक तलाशने की आवश्यकता पर बल मिलता है। इस विषय को सिस्टम थ्योरी, सांस्कृतिक सिद्धांत या पारिस्थितिकी–आलोचनात्मक ढांचे जैसे सिद्धांतों के संयोजन में खोजा जा सकता है, जिससे इस विषय को नए और ताजा दृष्टिकोण मिल सकते हैं। संक्षेप में, साहित्यिक अध्ययनों में लैक्टो–शाकाहार को शामिल करके, अनुसंधान निश्चित रूप से यह पता लगा सकता है कि साहित्य किस तरह से मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है और उन्हें आकार देता है।

इसके अलावा, दयालबाग समुदाय का सदस्य होने के नाते, लैक्टो–शाकाहार मेरे लिए आध्यात्मिक महत्व रखता है; मैं यह देखते हुए बड़ी हुई हूं कि कैसे यह अभ्यास हमारे समुदाय के सदस्यों को नैतिक और टिकाऊ जीवन जीने से जोड़ता है। इसलिए, आज, जब मैं एक शिक्षक के रूप में चिंतन करती हूं..... मुझे लगता है कि दयालबाग जीवन शैली में निहित लैक्टो–शाकाहार के मूल्यों से मेरा व्यक्तिगत जुड़ाव, मेरे विद्यार्थियों को साहित्य में इस विषय पर सार्थक बातचीत करने में मदद कर सकता है।

संदर्भ
प्लेटो. (2007). द रिपब्लिक. (डी. ली, अनुवादकय दूसरा संस्करण)
सवा, थियोफिलस। (2024)। प्राचीन काल से लेकर 21वीं सदी तक के साहित्य में शाकाहार और शाकाहारीवाद। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
शेली, पर्सी. (1884). प्राकृतिक आहार का औचित्य. एफ. पिटमैन, जे. हेवुड और शाकाहारी सोसायटी, लंदन.

लैक्टो शाकाहार – प्रकृति और मानवता का पोषण

प्रिया सिंह
एमबीएम (बैच 1993), धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (बैच 2012), डी. ई. आई.
वर्तमान में, केंद्र प्रभारी, डीईआई चेन्नई सूचना केंद्र

दयालुता के बगीचे दयालबाग में जीवन जीवंत,
शांत और आनंदमय है।
हवा और पानी की गुणवत्ता बनी हुई है,
प्रकृति की सुंदरता भी बरकरार है।

कृषि पारिस्थितिकी के माध्यम से,
जैविक फसलें विकसित होती हैं,
लैक्टो शाकाहारी आहार का सभी लोग पालन करते हैं,
ताजा दूध, डेयरी, फल और सब्जियां, सभी निवासियों को मजबूत और सक्षम बनाती हैं।

यह आहार बहुत संतुलित है,
सभी को सही पोषण देना।
प्रकृति, वनस्पति, जीव सभी संरक्षित हैं।
प्रकृति के साथ मनुष्य का खूबसूरती से जुड़ाव है।

यह आहार संत सुपरमैन को पोषण देता है,
उन्हें चुनौतियों का सामना करने के लिए मजबूत बनाता है,
जब दुनिया में, संघर्ष बहुत होगा,
वे शांति और सद्भाव फैलाएंगे,
मानवता में एक नई विश्व व्यवस्था लाएंगे

पाठक प्रतिक्रिया अनुभाग

कृषि पारिस्थितिकी: प्रकृति के साथ खेती, विज्ञान द्वारा संचालित

स्री प्रभा एस
धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, बैच 2021, DEI; वर्तमान में, स्वतंत्र QA विश्लेषक, IT

मुझे पिछले अंक में कृषि पारिस्थितिकी पर लेख काफी रोचक लगे। मैं पाठकों के साझा दृष्टिकोण से पूरी तरह सहमत हूँ। निस्संदेह, कृषि पारिस्थितिकी एक पर्यावरण–अनुकूल खेती का दृष्टिकोण है जो भोजन उगाने के लिए प्राकृतिक तरीकों का उपयोग करने पर केंद्रित है। यह रसायनों से बचता है और भूमि को स्वस्थ रखने के लिए फसल चक्र, खाद बनाना और जैविक खेती जैसी पद्धतियाँ अपनाता है। इसका लक्ष्य प्रकृति के साथ काम करना है, उसके खिलाफ नहीं।

कृषि पारिस्थितिकी को जो चीज अद्वितीय बनाती है, वह है पारंपरिक कृषि ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का संयोजन। किसान स्थानीय, टिकाऊ समाधान विकसित करने के लिए दोनों का उपयोग कर सकते हैं। एक महत्वपूर्ण उपकरण है Precision फार्मिंग, जो ड्रोन, सेंसर और ग्लोबल पोज़िशनिंग सिस्टम (जीपीएस) जैसी तकनीक का उपयोग करके फसल वृद्धि, जल उपयोग और मृदा स्वास्थ्य को ट्रैक करता है । इससे खाद्य उत्पादन बढ़ता है, संसाधनों की बचत होती है और किसानों को बेहतर निर्णय लेने में मदद मिलती है।

कृषि पारिस्थितिकी खाद्य संकट जैसी प्रमुख वैश्विक चुनौतियों से निपटने में भी मदद करती है। मिट्टी की सेहत में सुधार करके और खेती को जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक लचीला बनाकर, यह उन जगहों पर खाद्य उत्पादन बढ़ा सकता है जहाँ इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। अंत में, कृषि पारिस्थितिकी अधिक लोगों को भोजन उपलब्ध कराने, पर्यावरण की रक्षा करने और सभी के लिए अधिक टिकाऊ भविष्य का निर्माण करने में सक्षम हैं।

संदर्भ

https%//www-sciencedirect-com/topics/agricultural&and&biological&sciences/agroecology

https%//www-sciencedirect-com/topics/agricultural&and&biological&sciences/precision&agriculture

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई

संरक्षक
प्रो. सी. पटवर्धन
मुख्य संपादक
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय बोर्ड
डॉ. सोना दीक्षित
डॉ. सोनल सिंह
डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी
डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्य
डॉ. चारु स्वामी
डॉ. नेहा जैन
डॉ. सौम्या सिन्हा
श्री आर.आर. सिंह
प्रो. प्रवीण सक्सेना
प्रो. वी. स्वामी दास
डॉ. रोहित राजवंशी
डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार
प्रो. एस.के. चौहान
अनुवादक
डॉ. नमस्या
डॉ. निशिथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक
प्रो. सी. पटवर्धन
प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार
प्रो. एस.के. चौहान
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल
डॉ. सोनल सिंह
डॉ. मीना पायदा
डॉ. लौलीन मल्होत्रा
डॉ. बानी दयाल धीर
श्री राकेश मेहता

अनुवादक
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni (AADEIs & AAFDEI)

संपादक
प्रो. गुर प्यारी जंडियाल

संपादकीय समिति
डॉ. सरन कुमार सतसंगी,
प्रो. साहब दास
डॉ. बानी दयाल धीर
श्रीमती शिफाली सत्संगी
श्रीमती अरुणा शर्मा
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा
डॉ. गुरप्यारी भटनागर
डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा
डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालयः पहली मंजिल, 63, नेहरू नगर, आगरा –282002

पंजीकृत कार्यालयः 108, साउथ एक्स प्लाजा –1, साउथ एक्सटेंशन पार्ट II, नई दिल्ली–110049

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशनः दयालबाग़ प्रेस